

॥ देवी सूक्तम् ॥

रिग्वेद संहिता, मण्डलम् १०, अष्टकम् ८, सूक्तम् - १२५

ओम् ॥

अहम् रुद्रेभिर् वसुभिश् चराम्यहम् आदित्यैरुत विश्वदेवैहि ।

अहम् मित्रा वरुणोभा बिभर्म्यहम् इन्द्राग्नी अहम् अश्विनोभा ॥ १ ॥

अहम् सोम माहनसम् बिभर्म्यहम् त्वश्टारमुत पूशणम् भगम् ।

अहम् दधामि द्रविणम् हविश्मतेय् सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वतेय् ॥ २

॥

अहम् राश्ट्री सन्गमनी वसूनाम् चिकितुशी प्रथमा यग्यियानाम् ।

ताम् मा देवा व्यदधुह् पुरुत्रा भूरिस्थात्राम् भूर्या वेशयन् तीम् ॥ ३ ॥

मया सोऽन्नमत्ति यो विपश्यति यद् प्राणिति यद्म श्रुणोत्युक्तम् ।

अमन्तवोमान्त उपक्शियन्ति श्रुधिश्नुत श्रद्धिवम् तेय् वदामि ॥ ४ ॥

अहमेव स्वयम् इदम् वदामि जुश्टम् देवेभिरुत मानुशेभिहि ।

यम् कामयेय् तम् तमुग्रम् कृणोमि तम् ब्रह्माणम् तमृशिम् तम्

सुमेधाम् ॥ ५ ॥

अहम् रुद्राय धनुरातनोमि ब्रह्मद्विशेय् शरवेहन्त वा उ ।

अहम् जनाय समदम् कृणोम्यहम् द्यावापृथिवी आविवेश ॥ ६ ॥

अहम् सुवेय् पितरमस्य मूर्धन् मम योनिरप्स्व अन्तह् समुद्रेय् ।

ततो वितिशेय् भुवनानु विश्वो तामूम् द्याम् वशर्मणोपस्पृशामि ॥ ७

॥

अहमेव वात इव प्रवाम्य अरभमाणा भुवनानि विश्वा ।

परो दिवा परएना प्रुथिव्यै तावती महिना सम्बभूव ॥ ८ ॥
ओम् शान्तिह् शान्तिह् शान्तिहि ॥

www.yousigma.com